बकरी पालन

डॉ. अनिल शिंदे (वैज्ञानिक), डॉ. संजीव वर्मा (वैज्ञानिक), डॉ. संजय जैन (वैज्ञानिक) एवं डॉ. विजय कुमार वर्मा (केन्द्र प्रमुख)
कृषि विज्ञान केन्द्र बैतूल (म.प्र.)

आज के समय में अगर किसानों को अपनी आय दोगुनी करनी है तो खेती के साथ–साथ सहायक व्यवसायों का चयन करना आवश्यक है। खेती और पशु दोनों एक दूसरे के पर्याय है। पशु पालन हमेशा अधिकतर लघु एवं सीमांत किसानों का आजीविका का मुख्य साधन रहा है। गरीब की गाय के नाम से मशहुर बकरी हमेशा आजीविका के सुरक्षित स्त्रोत में पहचानी जाती है। बकरी पालन में कम जगह, कम लागत, सामान्य रख'–रखाव तथा पालन'–पोषण और विक्रय हेतु मार्केट सुविधा उपलब्ध होने के कारण यह व्यवसाय अब पूरे देश में अच्छे से बढ़ रहा है।

महिलाएं एवं बच्चे भी आसानी से इसे व्यवसाय के रूप में अपना सकते हैं। अधिकतर आदिवासी परिवार गाय एवं भैंस पालन के साथ बकरी पालन को भी आजीविका का मुख्य साधन बना रहे हैं क्योंकि जंगलों में इन्हें बाकी पशुओं के साथ पाला जाता है और उनकी रोजी'–रोटी आसानी से चल रही है।

बकरी पालन एक लाभदायक व्यवसाय है और इसे कृषि के साथ आसानी से किया जा सकता है। अपने प्रदेश में बकरी पालन मुख्य रूप से मांस एवं दूध के लिए किया जाता है। इसे या तो एक जगह रखकर (स्टॉल विधि) या बाहर घुमाकर–चराकर किया जाता है। अगर किसान भाई इसे वैज्ञानिक तरीकों से करे तो निश्चित ही यह लाभ का व्यवसाय हो सकता है।

विभिन्न नस्लें–

हमारे देश में विभिन्न नस्लों की बकरियां पाली जाती है। इसमें स्थानीय वातावरण के लिए अनुकूल बकरी का पालने हेतु चयन करना चाहिए।

1) उस्मानाबादी– यह बकरी दूध एवं मांस के लिए बेहतर है और यह महाराष्ट्र में पायी जाती है। आमतौर पर यह वर्ष में दो बार प्रजनन करती है और इस दौरान दो या तीन बच्चें एक साथ प्राप्त हो सकते हैं।

2) जमुनापारी– यह नस्ल अन्य बकरियों की अपेक्षा दूध अच्छा देती है। यह उत्तरप्रदेश की है। इसका प्रजनन वर्ष में एक बार ही होता है। जुड़वां बच्चे पैदा होने की कम संभावना होती है।

3) बीटल– यह भी खासतौर पर दूध देने के लिए मशहुर है। यह पंजाब और हरियाणा में पाई जाती है। इसके जुड़वां बच्चे पैदा होने की संभावना अधिक रहती है।

4) सिरोही– यह दूध और मांस दोनों के लिए पाली जाती है। यह राजस्थानी नस्ल है। यह बकरी वर्ष में दो बार प्रजनन क्रिया करती है और इस नस्ल में जुड़वां बच्चों की संभावना कम रहती है।

5) बारबारी– यह नस्ल मांस एवं दूध के लिए पाली जाती है। यह पंजाब, हरियाणा और उत्तरप्रदेश में पाई जाती है। इस नस्ल का साल में दो बार प्रजनन होता है और दो–तीन बच्चें एकसाथ ही मिलते हैं।

6) अफ्रिकन बोर– यह नस्ल मांस प्राप्त करने हेतु उपयोग में लाई जाती है। इसका वजन कम समय में काफी अधिक बढ़ जाता है जिससे अधिक लाभ प्राप्त होता है। यह बकरियां अधिकतर जुड़वां बच्चे पैदा करती है। इसी वजह से बाजार में इस नस्ल की अधिक मांग रहती है।

शुरूआती तौर पर बकरी पालन करते समय एक ही नस्ल के बकरियों का चयन करना चाहिए जिससे उनके पालन–पोषण में आसानी होगी।

आवास व्यवस्था–

बकरी पालन करते समय ऐसे स्थान का चयन करना चाहिए जो कि शहर से दूर यानि ग्रामीण क्षेत्रों में हो जिससे बकरियां प्रदूषण एवं अनावश्यक शोर से दूर रहेगी। बकरियों के आवास का निर्माण उनकी संख्या पर निर्भर करता है। एक वयस्क बकरी के लिए 10–12 वर्ग फीट एवं मेमनों (बकरियों के बच्चे) के लिए 5 वर्ग फीट की आवश्यकता होती है। अगर छोटे स्तर पर बकरी पालन हो रहा है तो सस्ते में अच्छा शेड बनवा सकते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य गर्मी में धूप, सर्दी में ठंड और बरसात में बारिश से बचाव के लिये होता है। शेड की ऊंचाई 10–12 फीट ऊंची होनी चाहिए और वह हवादार होना चाहिए।

बकरियों को चारे और पानी की व्यवस्था उनके शेड में करानी चाहिए। शेड का फर्श समतल एवं सूखा होना चाहिए और उनके मल–मूत्र की साफ–सफाई का ध्यान रखना आवश्यक है।

आहार व्यवस्था–

बकरियों की आहार व्यवस्था उनके रख–रखाव की विधि पर निर्भर करती है। जैसे कि खुले में चरने वाली विधि में बकरियों को खुले मैदान में भी घास, पत्तियां खाने के लिए छोड़ा जा सकता है और उन्हें खेतों, जंगलों या पहाड़ियों से बाकी पशुओं के साथ घुमाकर भी ला सकते हैं। इस विधि में खाने का खर्चा कम आता है। इसके अलावा स्टॉल विधि में बकरियों को शेड में ही खिलाया जाता है।

बकरियों के आहार में सूखा और हरा चारा एवं दाना मिश्रण सही मात्रा में होना चाहिए। एक वयस्क बकरी को औसत एक किलो घास या पत्ते तथा 200–250 ग्राम दाना मिश्रण (चोकर, खल्ली) देना चाहिए। उम्र और वजन के अनुसार बढ़ाना या घटाना चाहिए।

बकरियों के आहार में निम्नलिखित घास, पत्तियां, चारा आदि शामिल कर सकते हैं–

1) बबूल, बरगद, तूत, नीम, आम, कटहल।

2) पीपल पेड़ों की पत्तियां, बेर, गुलाब के पत्ते, मूली के पत्ते।

3) मैथी, मूली, पालक, सरसों, गाजर, फूलगोभी।

4) रसीले पत्ते जैसे कि बबूल एवं मटर के पत्ते।

5) घासें– हाइब्रिड नेपियर, लूसर्न, बरसीम, अंजन घास, पेरा घास।

6) भूसा– गेहूं, जौ एवं विभिन्न दालों का भूसा।

बकरियों को दिया जाने वाला मिश्रित दाना (संम्पूर्ण आहार) भी बाजार में उपलब्ध है जिसमें आयु के अनुसार आवश्यकतानुसार विभिन्न दाने का मिश्रण एकरूप में लाया जाता है। यह मूंगफली की खल्ली, गेहूं चोकर, चने का चूरा, भुट्टे का चूरा, जौ, नमक, खनिज मिश्रण और गुड़ आदि से बनाया जाता है।

बकरियों को गर्भावस्था के अंतिम माह में आसानी से पचने वाला संतुलित आहार खिलाना चाहिए। नर बकरों को भी प्रजनन अर्थात् गर्भधारण के मौसम में पौष्टिक संतुलित आहार देना चाहिए।

प्रजनन व्यवस्था–

एक बकरी लगभग डेढ़ वर्ष (औसत वजन 20–25 कि.ग्रा.) की अवस्था में बच्चे देने की स्थिति में आ जाती है। बकरियों में 150–155 दिन की गर्भावस्था रहती है। बकरियां छः–सात माह में बच्चा देती है। एक बार में दो–तीन बच्चे एक साथ देती है। कई नस्ल एक साल में दो बार या दो साल में तीन बार बच्चे देते हैं। बच्चों को छः–आठ माह पालने के बाद उसे बेच सकते हैं। जनने के बाद बकरियां 30–31 दिन में मदकाल यानि हीट पर आती है और मदकाल का अवधि 12–36 घंटों का रहता है। इस समय उसी नस्ल या उच्चतम नस्ल के नर बकरों से उनका गर्भाधान कराना चाहिए। 20–22 बकरियों के लिए एक बकरा काफी होता है। अगर इस समय गर्भधारणा नहीं होती है तो वह दुबारा 21 दिन बाद मदकाल पर आती है।

गाभन बकरियों को गर्भावस्था के अंतिम डेढ़ महिने में पौष्टिक संतुलित आहार देना चाहिए क्योंकि इस समय पेट में पल रहे बच्चे का विकास काफी तेजी से होने लगता है। पोषण एवं रख–रखाव पर ध्यान देने से स्वस्थ बच्चा पैदा होगा और बकरी का दूध उत्पादन भी बढ़ जाएगा।

स्वास्थ प्रबंधन–

अन्य पशुओं की तरह बकरियां भी बीमार पड़ती है और संक्रामक रोगों के कारण बीमार पड़ने पर उनकी मृत्यु भी हो जाती है। ऐसे समय बकरियों में मृत्यु दर कम करने के लिए और संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए टीकाकरण करवाना चाहिए।

बकरियों की टीकाकरण तालिका–

स.क्रं.	रोग का नाम	शुरूआत कार्यनीति	बुस्टर	टिप्पणी
1	खुरपका– मुंहपका	3–4 माह	4 माह बाद	छः माह के अंतराल से वर्ष में दो बार
2	पी.पी.आर.	4 माह	चार वर्ष के अंतराल से	–
3	पॉक्स (देवीरोग)	3–5 माह	प्रतिवर्ष एक बार	–
4	गलघोटु	6 माह	प्रतिवर्ष एक बार	बारिश के पहले
5	एन्थ्रेक्स	4–5 माह	वर्ष में एक बार	महामारी क्षेत्र में

बकरियों में परजीवी रोग भी अधिकांश दिखाई देते हैं–

1) आंतरिक परजीवी जैसे कि गोलकृमि, फीताकृमि आदि इसके प्रकोप से बकरियों के उत्पादन में कमी आ जाती है और वजन भी कम हो जाता है। इसके लिए कृमिनाशक दवा (अलबेंडाजोल, फेनबेंडाजोल आदि) बकरियों को पिलानी चाहिए। कृमिनाशक दवा चार माह के अंतराल पर अवश्य पिलानी चाहिए।

2) बाह्य परजीवी (जूँ, किल्ली) भी बकरियों में काफी हानि पहुंचाते हैं। इसके लिए बाह्य परजीवी नाशक का सही मात्रा में पानी में घोलकर बकरियों के शरीर पर छिड़काव करना चाहिए। बाह्य परजीवी नाशक लगाते समय ध्यान रहे कि यह बकरियों के आंख या मुंह में नहीं जाना चाहिए।

बकरियों में बरसात और ठंड के मौसम में निमोनिया (सर्दी–जुकाम) की बीमारी होती है। इसमें बकरियों को बुखार और दस्त भी लग जाते हैं। यह बीमारी ज्यादातर बच्चों में पाई जाती है। बकरियों को प्रतिकूल परिस्थिति से बचाने से इसे रोका जा सकता है। इन बीमारियों के अलावा बकरियों में दस्त लगना, आंत ज्वर (इन्टेरोटोक्सिमियां), पेट फुलना, थनेला जैसी बीमारियां हो जाती है। अगर सही से प्रबंधन किया जाए तो इनसें बचा जा सकता है।

अंत में यही कहना सही रहेगा कि अगर हमें हमारे बकरी पालन व्यवसाय से अच्छी आय लेनी होगी तो सही नस्ल का चयन, आवास, आहार, प्रजनन व्यवस्था और स्वास्थ्य प्रबंधन पर ध्यान देना चाहिए ताकि हम कम लागत में अच्छी से अच्छा व्यवस्थाएं दे कर उत्पादकता बढ़ा सकें।